ISBN: 978-81-974990-9-8

10. Covid-19 का शिक्षकों पर प्रभाव ओर नवाचार

डॉ. जया शर्मा
विभागाध्यक्ष,
कृषि विज्ञान संकाय सैम ग्लोबल यूनिवर्सिटी, रायसेन.

प्रो. राजेश पवार
SAGE यूनिवर्सिटी, इंदौर.

डॉ. शांति शर्मा
ए.एस.इ कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन, भोपाल.

प्रस्तावना :-

कोविड-19 आपदा को भूल पाना नामुमकिन है, क्योंकि इसकी बारबादी ने अपना मुंह खोला छुपके से बहुत अधिक संख्या में जन जीवन को काल के मुंह में बंद कर दिया। ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं हे जिस पर covid १९ का प्रभाव नहीं हुआ इस लेख में विशेष रूप से शिक्षा के क्षेत्र में हुए प्रभाव और नवाचार पर चर्चा की गई है। कोविड-19 महामारी ने शिक्षा क्षेत्र को गहराई से प्रभावित किया।जिससे दुनिया भर के शिक्षकों और संस्थानों को अभूतपूर्व चुनौतियों के लिए तेज़ी से अनुकूलन करने के लिए मजबूर होना पड़ा। संकट के इस दौर ने शिक्षा में प्रौद्योगिकी और नवाचार को अपनाने में तेज़ी ला दी, पारंपरिक शिक्षण विधियों और शिक्षकों की भूमिका को नया आकार दिया।

शिक्षकों पर प्रभाव:

1. ऑनलाइन शिक्षण में बदलाव-:

शिक्षकों को व्यक्तिगत शिक्षण से ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म पर जल्दी से जल्दी जाना पड़ा। इस बदलाव के लिए उन्हें डिजिटल टूल और ऑनलाइन शिक्षण में नए कौशल हासिल करने की आवश्यकता थी, अक्सर न्यूनतम प्रशिक्षण और संसाधनों के साथ।

2. बढ़ा हुआ कार्यभार और तनाव-:

दूरस्थ शिक्षा में बदलाव ने शिक्षकों के कार्यभार में काफी वृद्धि की। उन्हें डिजिटल सामग्री बनानी पड़ी, वर्चुअल कक्षाओं का प्रबंधन करना पड़ा और छात्रों को अतिरिक्त सहायता प्रदान करनी पड़ी, साथ ही महामारी के कारण उत्पन्न अपनी व्यक्तिगत चुनौतियों से निपटना पड़ा।

3. पेशेवर विकास-:

ऑनलाइन शिक्षण की आवश्यकता ने कई शिक्षकों को अपनी डिजिटल साक्षरता और शिक्षण रणनीतियों को बेहतर बनाने के लिए पेशेवर विकास में संलग्न होने के लिए प्रेरित किया। इस अवधि में शिक्षकों के बीच ऑनलाइन पाठ्यक्रम, वेबिनार और सहयोगी शिक्षण में उछाल देखा गया।

4. भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक तनाव-:

महामारी ने शिक्षकों के बीच मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को बढ़ा दिया है, क्योंकि वे एकांत में हैं, नौकरी की मांग बढ़ गई है और उनके स्वास्थ्य और सुरक्षा को लेकर चिंताएँ हैं।

छात्रों और सहकर्मियों के साथ आमने-सामने बातचीत की कमी ने भी अलगाव और बर्नआउट की भावनाओं को बढ़ावा दिया।

शिक्षा में नवाचार:

1. तकनीकी एकीकरण-:

महामारी ने शिक्षा में प्रौद्योगिकी के एकीकरण को गति दी। शिक्षकों ने शिक्षण, मूल्यांकन और संचार के लिए विभिन्न डिजिटल उपकरणों और प्लेटफार्मों का उपयोग किया।

इस बदलाव ने न केवल शिक्षा में निरंतरता की सुविधा प्रदान की, बल्कि इंटरैक्टिव और मल्टीमीडिया सामग्री के माध्यम से सीखने के अनुभव को भी बढ़ाया।

2. मिश्रित शिक्षण मॉडल-:

लचीले शिक्षण समाधानों की आवश्यकता ने ऑनलाइन और व्यक्तिगत निर्देश को मिलाकर मिश्रित शिक्षण मॉडल को अपनाने का नेतृत्व किया।

इस हाइब्रिड दृष्टिकोण ने अधिक व्यक्तिगत शिक्षण अनुभव प्रदान किए और संभावित रूप से महामारी के बाद शिक्षा को लाभ पहुंचाना जारी रख सकता है।

3. सहयोगी शिक्षण-:

शिक्षकों और छात्रों ने सहयोगी उपकरणों और प्लेटफार्मों को अपनाया, जिससे अधिक इंटरैक्टिव और सहकारी शिक्षण वातावरण को बढ़ावा मिला।

यह सहयोग कक्षाओं से आगे बढ़कर वैश्विक कनेक्शन को शामिल करता है, जिससे विचारों और संसाधनों का बेहतर आदान-प्रदान संभव होता है।

4. मूल्यांकन में नवाचार-:

पारंपरिक मूल्यांकन विधियों का पुनर्मूल्यांकन किया गया, जिससे रचनात्मक मूल्यांकन, परियोजना-आधारित शिक्षण और डिजिटल पोर्टफोलियो जैसे नवीन दृष्टिकोण सामने आए।

इन विधियों ने छात्रों के सीखने और प्रगति का अधिक व्यापक मूल्यांकन प्रदान किया।

5. स्वास्थ्य पर ध्यान-:

महामारी ने शिक्षा में मानसिक स्वास्थ्य और स्वास्थ्य के महत्व को उजागर किया।

स्कूलों और शिक्षकों ने छात्रों और कर्मचारियों की भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक ज़रूरतों का समर्थन करने के लिए विभिन्न पहलों को लागू किया, जिससे स्वास्थ्य को व्यापक शैक्षिक ढांचे में एकीकृत किया गया।

कोविड-19 महामारी ने शिक्षकों पर गहरा प्रभाव डाला, उनकी भूमिका को चुनौती दी और नई परिस्थितियों के लिए तेजी से अनुकूलन की मांग की। प्रभाव के प्रमुख क्षेत्रों में शामिल हैं:

1. **ऑनलाइन शिक्षण में तेजी से बदलाव-**

- **प्रौद्योगिकी अपनाना**-: शिक्षकों को ज़ूम, गूगल क्लासरूम और विभिन्न लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम (LMS) जैसे डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म और टूल से जल्दी से परिचित होना पड़ा।
- **तकनीकी चुनौतियाँ**-: कई शिक्षकों को इंटरनेट कनेक्टिविटी, पर्याप्त हार्डवेयर तक पहुँच और अपरिचित सॉफ़्टवेयर को नेविगेट करने से संबंधित समस्याओं का सामना करना पड़ा।

2. **कार्यभार और तनाव में वृद्धि-**

- **सामग्री निर्माण**-: ऑनलाइन सामग्री और शिक्षण सामग्री विकसित करना समय लेने वाला था। शिक्षकों को अपनी पाठ योजनाओं पर फिर से विचार करना पड़ा और उन्हें आभासी वातावरण के लिए अनुकूलित करना पड़ा।
- **छात्रों के साथ संचार**-: छात्रों के साथ जुड़ाव और संचार बनाए रखना अधिक चुनौतीपूर्ण हो गया, जिसके लिए अधिक बार जाँच और व्यक्तिगत सहायता की आवश्यकता थी।

3. **कार्य-जीवन संतुलन-:** घर और कार्यस्थलों के सम्मिश्रण के कारण काम के घंटे लंबे हो गए और व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन के बीच संतुलन बनाए रखने में मुश्किलें आईं।
4. **व्यावसायिक विकास-कौशल संवर्धन**-: नई मांगों को प्रबंधित करने के लिए, व्यावसायिक विकास में लगे कई शिक्षकों ने डिजिटल साक्षरता, ऑनलाइन शिक्षण रणनीतियों और नए शैक्षणिक दृष्टिकोणों पर ध्यान केंद्रित किया।
5. **सहयोगी शिक्षण**-: शिक्षक अक्सर सहकर्मियों के साथ सहयोग करते हैं, ऑनलाइन शिक्षण प्रभावशीलता में सुधार करने के लिए संसाधनों और रणनीतियों को साझा करते हैं।
6. **भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक तनाव**

- **मानसिक स्वास्थ्य चुनौतियाँ**-: अलगाव, अनिश्चितता और बढ़े हुए कार्यभार ने शिक्षकों के बीच तनाव, चिंता और बर्नआउट के उच्च स्तर में योगदान दिया।

- **छात्र कल्याण**-: शिक्षकों को अपने छात्रों की भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक ज़रूरतों को भी संबोधित करना पड़ा, जिससे ज़िम्मेदारी की एक और परत जुड़ गई।

6. मूल्यांकन और प्रतिक्रिया में परिवर्तन

- **मूल्यांकन विधियाँ-:** पारंपरिक परीक्षाएँ और मूल्यांकन अक्सर अव्यावहारिक होते थे, जिसके कारण शिक्षकों को प्रोजेक्ट-आधारित असाइनमेंट, ऑनलाइन क्विज़ और निरंतर मूल्यांकन रणनीतियों जैसे वैकल्पिक मूल्यांकन विधियों को विकसित करना पड़ा।
- **प्रतिक्रिया-**: ऑनलाइन सेटिंग में समय पर और सार्थक प्रतिक्रिया प्रदान करने के लिए अभिनव दृष्टिकोण और अतिरिक्त प्रयास की आवश्यकता थी।

7. समानता और पहुँच के मुद्दे:

- **डिजिटल विभाजन**-: महामारी ने प्रौद्योगिकी और इंटरनेट तक पहुँच में असमानताओं को उजागर किया, जिसमें कुछ छात्र और शिक्षक दूसरों की तुलना में अधिक वंचित थे।
- **कमज़ोर छात्रों के लिए सहायता**-: शिक्षकों को उन छात्रों का समर्थन करने के तरीके खोजने पड़े जिनके पास डिजिटल संसाधनों तक पहुँच नहीं थी या जिन्हें घर से सीखने में अन्य बाधाओं का सामना करना पड़ा।

8. दीर्घकालिक निहितार्थ:

- **मिश्रित शिक्षण**-: ऑनलाइन शिक्षण के अनुभव ने कई शिक्षकों को मिश्रित शिक्षण मॉडल अपनाने के लिए प्रेरित किया है, जो भौतिक कक्षाओं में वापसी के बाद भी ऑनलाइन और आमने-सामने निर्देश को मिलाते हैं।
- **भविष्य की तैयारी**-: महामारी ने स्कूलों को भविष्य में होने वाले व्यवधानों के लिए बेहतर तरीके से तैयार रहने की आवश्यकता को रेखांकित किया, जिससे प्रौद्योगिकी अवसंरचना और शिक्षक प्रशिक्षण में निवेश हुआ।

कोविड-19 महामारी ने शिक्षा क्षेत्र में नवाचार को काफी हद तक गति दी है, जिससे दूरस्थ और हाइब्रिड शिक्षण वातावरण की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए तेज़ी से बदलाव और अनुकूलन हुए हैं। प्रभाव के प्रमुख क्षेत्रों में शामिल हैं:

1. तकनीकी एकीकरण:

- **डिजिटल उपकरण और प्लेटफ़ॉर्म**-: ज़ूम, माइक्रोसॉफ्ट टीम्स, गूगल क्लासरूम और अन्य एलएमएस प्लेटफ़ॉर्म जैसे उपकरणों को व्यापक रूप से अपनाने से वर्चुअल क्लासरूम और प्रशासनिक कार्य आसान हो गए हैं।
- **एडटेक समाधान**-: महामारी ने इंटरैक्टिव ऐप, एआई-संचालित ट्यूशन सिस्टम और वर्चुअल लैब सहित विभिन्न शैक्षिक तकनीकों के विकास और तैनाती को बढ़ावा दिया।

2. मिश्रित और हाइब्रिड लर्निंग मॉडल:

- **संयोजन के तौर-तरीके**-: कई संस्थानों ने मिश्रित शिक्षण मॉडल लागू किए हैं जो ऑनलाइन और व्यक्तिगत निर्देश को मिलाते हैं, जिससे अधिक लचीलापन और पहुँच मिलती है।
- **फ़्लिप्ड क्लासरूम**-: यह दृष्टिकोण, जहाँ छात्र घर पर व्याख्यान सामग्री से जुड़ते हैं और कक्षा के समय का उपयोग इंटरैक्टिव गतिविधियों के लिए करते हैं, अधिक प्रचलित हो गया।

3. व्यक्तिगत शिक्षण:

- **अनुकूली शिक्षण प्रौद्योगिकियाँ**-: AI और मशीन लर्निंग एल्गोरिदम ने व्यक्तिगत शिक्षण अनुभव बनानमें मदद की, व्यक्तिगत छात्र की ज़रूरतों और सीखने की गति के अनुसार सामग्री तैयार की।
- **डेटा-संचालित अंतर्दृष्टि**-: शिक्षकों ने छात्र की प्रगति और जुड़ाव की निगरानी के लिए डेटा एनालिटिक्स का लाभ उठाया, जिससे अधिक लक्षित हस्तक्षेप संभव हो सके।

4. अभिनव मूल्यांकन विधियाँ:

- **ऑनलाइन मूल्यांकन**-: पारंपरिक परीक्षाओं को ऑनलाइन क्विज़, ओपन-बुक टेस्ट और टेक-होम असाइनमेंट से बदल दिया गया या उनके साथ पूरक बनाया गया।
- **प्रोजेक्ट-आधारित और फॉर्मेटिव मूल्यांकन**-: निरंतर मूल्यांकन और प्रोजेक्ट-आधारित सीखने पर जोर ने छात्र कौशल और समझ का अधिक व्यापक मूल्यांकन प्रदान किया।

5. शिक्षक प्रशिक्षण और व्यावसायिक विकास:

व्यावसायिक विकास-: शिक्षक अपनी डिजिटल साक्षरता में सुधार करने और नई शिक्षण पद्धतियों को अपनाने के लिए निरंतर सीखने में लगे हुए हैं।

सहकर्मी सहयोग-: वेबिनार, ऑनलाइन समुदायों और पेशेवर नेटवर्क के माध्यम से सर्वोत्तम प्रथाओं और संसाधनों को साझा करने के लिए शिक्षकों के बीच सहयोग में वृद्धि।

6. छात्र जुड़ाव और सहयोग:

इंटरैक्टिव सामग्री-: छात्र जुड़ाव और प्रेरणा को बढ़ाने के लिए मल्टीमीडिया सामग्री, गेमिफिकेशन और इंटरैक्टिव सिमुलेशन का उपयोग।

सहयोगी उपकरण-: Google डॉक्स, पैडलेट और चर्चा मंचों जैसे प्लेटफ़ॉर्म ने छात्र सहयोग और समूह कार्य को सुविधाजनक बनाया।

7. समानता और पहुँच:

पहुँच का विस्तार-: डिजिटल विभाजन को पाटने के प्रयासों में वंचित छात्रों को डिवाइस और इंटरनेट पहुँच प्रदान करना शामिल था।

यूनिवर्सल डिज़ाइन फ़ॉर लर्निंग (UDL): समावेशी शैक्षिक सामग्री बनाने पर अधिक ध्यान दिया गया जो विविध सीखने की ज़रूरतों और शैलियों को समायोजित करती है।

8. आजीवन सीखना और कौशल बढ़ाना:

ऑनलाइन पाठ्यक्रम और MOOCs-: मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्स (MOOCs) और अन्य ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफ़ॉर्म की लोकप्रियता बढ़ी, जिससे आजीवन सीखने और पेशेवर कौशल बढ़ाने के अवसर मिले।

कॉर्पोरेट प्रशिक्षण-: कंपनियों ने अपने कर्मचारियों को फिर से प्रशिक्षित करने के लिए ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में निवेश किया, ताकि नौकरी के बाज़ार की बदलती माँगों के अनुसार खुद को ढाल सकें।

9. मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण के लिए सहायता:

कल्याण कार्यक्रम-: स्कूलों और विश्वविद्यालयों ने छात्रों और कर्मचारियों के मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण का समर्थन करने के लिए कार्यक्रम लागू किए, जिसमें मानसिक स्वास्थ्य पर महामारी के प्रभाव को पहचाना गया।

सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा (SEL)-: छात्रों को भावनाओं को प्रबंधित करने, संबंध बनाने और ज़िम्मेदार निर्णय लेने में मदद करने के लिए SEL पर ज़्यादा ज़ोर दिया गया।

निष्कर्ष:-

कोविड-19 महामारी ने शिक्षकों पर महत्वपूर्ण चुनौतियाँ थोपी, जिसमें ऑनलाइन शिक्षण की ओर तेज़ी से बदलाव, कार्यभार में वृद्धि और भावनात्मक तनाव शामिल हैं। हालाँकि, इसने पेशेवर विकास, शिक्षण प्रथाओं में नवाचार और शिक्षा तक समान पहुँच की आवश्यकता के बारे में अधिक जागरूकता को भी उत्प्रेरित किया।

डिजिटल शिक्षा में तेज़ी से बदलाव आया और निरंतर व्यावसायिक विकास और समर्थन की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया। साथ ही, इसने शिक्षण विधियों और शैक्षिक प्रौद्योगिकी में नवाचार को बढ़ावा दिया, जिससे भविष्य के लिए एक अधिक लचीली और अनुकूलनीय शिक्षा प्रणाली तैयार हुई।

COVID-19 महामारी ने शिक्षा क्षेत्र में नवाचार के लिए उत्प्रेरक के रूप में काम किया, जिससे तकनीकी अपनाने, व्यक्तिगत शिक्षा और नए मूल्यांकन के तरीकों को बढ़ावा मिला। इसने समानता, पहुंच और मानसिक स्वास्थ्य सहायता की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला, जिससे शिक्षा को अधिक लचीले और लचीले भविष्य के लिए नया रूप दिया जा सके।